INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 8, August 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

अजन्ता की कला में पद्म का प्रतीकात्मक अंकन

कंचन (शोधार्थी)
दृश्यकला संकाय एवं चित्रकला विभाग
डी०एस०बी० परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

कला भारतीय जीवन एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। किसी भी विचार को अभिव्यक्त करने एक सशक्त माध्यम की आवश्यकता होती है, तथा प्राचीन काल से ही विचार अभिव्यक्ति का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम कलाप्रतीक ही रहे हैं। प्रतीक की सर्वमान्यता है कि किसी भी वस्तु के आकार को व्यक्त करने का यह एक सरलतम माध्यम है। प्रतीक स्वयं में एक भाषा है जो अपना परिचय अपने आकार से स्वतः व्यक्त करता है। सांकेतिक अर्थ में यह एक चिन्ह भी है जो अर्थ को प्रतिबिम्बित करता है। मनुष्य द्वारा अपने मन में जागृत भावों एवं विचारों को साकार एवं मूर्त रूप देने के लिए अनेक प्रतीकों का निर्माण किया गया। इन मांगलिक एवं पावन प्रतीकों में 'पद्म' अपने सौन्दर्य एवं स्वरूप के लिए विश्वव्यापी है। भारतीय कला परम्परा में पद्म को पवित्रता, शुद्धता, सौन्दर्य, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मिक उन्नति का महत्वपूर्ण प्रतीक माना गया है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य अजंता की कला में पद्म के विविध रूपों, उनके प्रतीकात्मक अर्थों तथा कलात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन करना है। इस शोधपत्र में अजंता की वास्तुकला, भित्तिचित्र एवं मूर्तिकला में पद्म के अंकन को प्रमुखता से विवेचित किया गया है। वास्तु अलंकरण में स्तम्भों, प्रवेश द्वारों का चौखट तथा छतों पर पद्म के विविध रूप दिखाई देते हैं, जबकि भित्ति चित्रों में पद्म धार्मिक एवं आध्यात्मिक अवधारणाओं को दृश्य अभिव्यक्ति प्रदान करता है। विशेषतः पद्मपाणि बोधिसत्व के अंकन में पद्म करूणा, शांति, दया एवं पवित्रता का प्रतीक है। मूर्तिकला में पद्मासन बौद्ध आध्यात्मिक आदर्शों को अभिव्यक्त करता है। अतः अजंता में पद्म केवल सजावती तत्व न होकर तत्कालीन धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यबोध का सशक्त प्रतीकात्मक रूपांतरण है।

बीज शब्द : अजंता, पद्म, प्रतीकात्मकता, बौद्ध कला, भित्ति चित्र, वास्तुकला, मूर्तिकला, भारतीय कला।

शोध का उद्देश्य

अजन्ता की कला में पद्म प्रतीक के प्रतीकात्मक अंकन का अध्ययन कर उसके अर्थ, कलात्मक तथ्य एवं प्रतीकात्मकता का अध्ययन करना है।

शोध विधि

इस शोधपत्र में मुख्य रूप से प्राथमिक स्त्रोत के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित करने का प्रयास किया गया है एवं द्वितीयक स्त्रोत के माध्यम से अजंन्ता की कला में अंकित पद्म प्रतीक के प्रतीकात्मक अंकन को वर्णित करने का प्रयत्न किया गया है।

जिस प्रकार भारत बौद्धधर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध की जन्मभूमि है, उसी प्रकार यह भी निर्विवाद है कि भारतवर्ष बौद्ध धर्म से सम्बन्धित चित्रकला का भी उद्गम एवं विकास का प्रमुख केन्द्र रहा है। अजंता की भित्ति चित्रकला मे इस कला की उन्नति एवं विकास की क्रमिक प्रक्रिया स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। भारतीय कला एवं संस्कृति के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में विश्वविख्यात 'अजन्ता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले से 102 कि० मी० दूर'[1], सतपुड़ा पर्वतश्रेणियों को काटती हुई वाघोरा नदी के किनारे मनोरम चन्द्राकार घाटी में स्थित हैं।

इन गुफाएँ का निर्माण दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लगभग 480 ईस्वी तक की अवधि में हुआ। पूर्व से पश्चिम दिशा में लगभग 600 गज की लम्बाई में पर्वतों को काटकर इन गुफाओं का निर्माण किया गया। अजन्ता में चट्टानों को काटकर कुल 30 बौद्ध गुफाओं का निर्माण किया गया, जो मुख्यतः दो प्रकार की हैं – चैत्य एवं विहार। चैत्य गुफाएं पूजा–अर्चना हेतु निर्मित थीं, जबकि विहार गुफाएं बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु प्रयुक्त होती थी।

इन गुफाओं में 9वीं, 10वीं, 19वीं, 19वीं, 26वीं एवं 30वीं गुफाएं चैत्य अर्थात् पूजास्थल के रूप में निर्मित हैं तथा शेष गुफाएं साधुओं का निवास स्थल अर्थात् विहार के रूप में प्रयुक्त हैं। इन बौद्ध गुफाओं में चित्रकला, मूर्तिकला एवं वास्तुकला का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है, जिससे परिणामस्वरूप अजन्ता भारतीय कला एवं संस्कृति के इतिहास में विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करती हैं।

चित्र सं० 1– अजन्ता की गुफाओं का दृश्य
चित्र स्त्रोत – छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

प्राचीन काल से विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का अत्यन्त लोकप्रिय एवं सशक्त माध्यम कला–प्रतीक ही रहे हैं। 'भारतीय कला में यह माध्यम प्रतीक रूप में दृष्टिगत होते हैं। यह कला प्रतीक भारतीय कला की वर्णमाला कहे जा सकते हैं। विभिन्न विचारों, परम्पराओं, मान्यताओं एवं विश्वासों को इन प्रतीकों ने साकार कर दिया है।'[2] भारतीय कला परम्परा में प्रतीकों को विशेष स्थान प्राप्त है। पद्म भारतीय कला का महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी प्रतीक है। मांगलिक एवं पावन प्रतीकों में 'पद्म' अपने सौन्दर्य, आकर्षक स्वरूप एवं विशिष्ट प्राकृतिक विशेषताओं के कारण विश्वव्यापी है। पद्म का यह मनोहारी स्वरूप एवं प्रतीकात्मक महत्व केवल भारतीय कला तक सीमित नहीं है, अपितु विश्वकला जगत में भी एक विशेष प्रतीक के रूप में अपनी प्रसिद्धि बनाये हुए है।

पद्म जिसे पुष्कर, पुंडरीक या कमल के नाम से जाना जाता है भारतीय संस्कृति का एक पवित्र एवं प्रतिष्ठित पुष्प है। भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक परम्पराओं में इसका विशेष महत्व विद्यमान है। भारतीय संस्कृति की पौराणिक

कथाओं, धार्मिक आख्यानों एवं कलात्मक अभिव्यक्तियों में पद्म को केन्द्रिय स्थान प्राप्त है। भारतीय परम्परा में ''कुछ ऐसे पुष्प है, जो पानी में पैदा होते हैं। ऐसे पुष्पों को जल–पुष्प, 'जलज' अथवा 'वारिजात' कहा जाता है। जलज पुष्पों में सर्वोच्च स्थान 'कमल' को प्राप्त है। द्वितीय स्थान पर कोक (कुमुद) का नाम लिया जाता है। यद्यपि 'कमल और कुमुद' में पर्याप्त साम्य है, परन्तु इनमें अन्तर–साम्य से भी अधिक है– रूप, गुण, प्रभाव सभी दृष्टियों से''।[3] भारतीय परम्परा में इन पुष्पों को केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक अवधारणाओं के प्रतीकात्मक प्रतिनिधि के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

'पद्म' संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ कमल का पुष्प है। संस्कृत साहित्य में इसके लिए अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग मिलता है जैसे– अब्ज, अम्बुज, जलज, वारिज, उत्पल, पद्म, कोकनद, सरसीरूह, शतदल, सहस्त्रदल, तामरस, राजीव आदि।[4]

पदुमक(फुल्ले), पद्मलता(पउमलय), पद्मनाल, पद्मकोष, निम्नाभिमुख कमल आदि बहुसंख्यक आकर्षक पद्म के रूप कला में उल्लेखनीय हैं।[5] इनका कला में आकर्षक पद्म के रूप में उल्लेखनीय निरूपण प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म में पद्म शुद्धता, आध्यात्मिक जागृति एवं निष्ठा से सम्बन्धित है। भगवान बुद्ध को पद्म नाल के साथ प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें पद्म का प्रयोग जीवन चक्र के रूप में अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर होने के मार्ग के प्रतीक के रूप में किया गया है।

मनरूपी पद्म के विकसित होने पर उसमें मणिरूपी ज्ञान के उद्भव का बोध होता है। अतः तिब्बती बौद्ध धर्म में प्रचलित पवित्र उपासना मंत्र ''ऊँ मणिपद्मेऽहम्''[6] के अर्न्तगत भगवान बुद्ध की अमूल्य शिक्षा को पद्म में समाहित रत्न (मणि) के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। सनातन धर्म के अतिरिक्त बौद्ध धर्म में भी पद्म को उच्च आध्यात्मिक स्थान प्राप्त है। बौद्ध ग्रन्थों में भगवान बुद्ध ने स्वयं की तुलना कमल पुष्प से की है। बौद्ध धर्म के प्रतीकों में पद्म शरीर, वाणी एवं मन की पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है।

अजन्ता की कला में पद्म का अंकन भारतीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण का सशक्त प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है। यह न केवल बौद्ध धर्म की विचारधारा को अभिव्यक्त करता है, अपितु भारतीय दार्शनिक परम्परा के विविध आयामों को भी दर्शाता है। धार्मिक प्रतीक के रूप में पद्म को पवित्रता, शुद्धता, सौन्दर्य एवं आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक माना जाता है।

'सुन्दर रूप और कल्पना की मृदु–मुस्कान, करूणा एवं शांति के आँचल से आवृत अजंता की कलाकृतियाँ अपने अवगुन्ठन में न जाने कितनी सरस भावनाओं एवं कलाकारों की अन्तर–अनुभूतियों की उपलब्धियाँ छिपायें अपने अस्तित्व से प्राचीन भारतीय कला इतिहास में अमरत्व का संदेश दे रही हैं।'[7] अजन्ता की कला के अर्न्तगत वास्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला तीनों ही कलाविधाओं में पद्म के विविध रूपों का अंकन किया गया है जिसका विवरण निम्नलिखित है–

1– वास्तुकला में पद्म अंकन

अजंता की वास्तुकला में पद्म का अंकन प्रचुरता से दृष्टिगोचर होता है। अजन्ता की गुफाओं की छतों (Ceiling), दीवारों एवं प्रत्येक स्तम्भों में पद्म की विविध आकृतियों का अत्यन्त सूक्ष्मता एवं कलात्मक कुशलता के साथ

अंकन किया गया है। प्रत्येक गुफा के अलंकरण में पद्म के विविध रूपों का अंकन सुसज्जित एवं सौन्दर्यपूर्ण ढ़ग से किया गया है। इसके माध्यम से अजंता के कलाकारों ने स्थापत्य–अलंकरण में पद्म के सौन्दर्यात्मक, प्रतीकात्मक एवं धार्मिक महत्व को प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त किया है।

चित्र सं० 2– गुफा सं० 28 के बाहर पद्म अंकन
चित्र स्त्रोत – छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

(क) स्तम्भों पर पद्म अंकन

अजन्ता की वास्तुकला में स्तम्भों का व्यापक एवं कलात्मक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। गुफाओं के प्रत्येक स्तम्भ को सौन्दर्यपरक दृष्टि से समृद्ध बनाने हेतु विविध प्रकार के अलंकरणों से सुसज्जित किया गया है। गुफाओं के आन्तरिक एवं बाह्य, दोनों भागों में स्थित स्तम्भों पर अत्यधिक सूक्ष्म एवं ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग किया गया है, जो तत्कालीन शिल्पकारों की उत्कृष्ट हस्त कौशल एवं कलात्मक दक्षता को अभिव्यक्त करता है।

स्तम्भों के आधारभाग पर पद्म की पंखुड़ियों का अंकन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अधिकांश स्तम्भों पर पूर्ण वृत्ताकार एवं अर्धवृत्ताकार आकृतियों के मध्य पद्मदल का सुन्दर उत्कीर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त स्तम्भों पर निर्मित वृत्ताकार अलंकरणों के मध्य मानवाकृतियों को भी उत्कीर्णन किया गया है। इस प्रकार, अजंता के स्तम्भों पर पद्म अलंकरण न केवल स्थापत्य सौन्दर्य को अभिवृद्धि प्रदान करता है, बल्कि तत्कालीन शिल्प परम्परा एवं कलात्मक अभिरूचि का भी परिचायक है।

चित्र सं० 3– स्तम्भों में पद्म अंकन
चित्र स्त्रोत – छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

(ख) चौखटों पर पद्म अंकन

अजन्ता की गुफाओं के प्रवेशद्वारों की चौखटों पर पद्म अलंकरण का विशिष्ट प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। चित्र संख्या 3 में गुफा के प्रवेश द्वार के बाहरी चौखट पर अनेक मानवाकृतियों का अंकन किया गया है। चौखट के स्तम्भों के समीप बोधिसत्वों की आकृतियाँ उकेरी गई है। इन आकृतियों के चारों ओर तथा चौखट के किनारों पर पद्मदल का क्रमबद्ध एवं पंक्तिबद्ध अलंकरण अंकित किया गया है। यह पद्म अलंकरण न केवल चौखट की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध करता है, अपितु अजंता की कला में पुष्पीय अलंकरण की विकसित परम्परा को भी स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करता है।

चित्र सं० 4– द्वार चौखट में पद्म अंकन
चित्र स्त्रोत – छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

2– चित्रकला में पद्म अंकन

अजन्ता की गुफाओं में पद्म का अंकन विशेष रूप से भित्ति चित्रों में देखा जाता है। अजन्ता की भित्ति चित्रकला में पद्म का अंकन भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। इन गुफाओं में अंकित पद्म केवल एक पुष्पीय आकृति के रूप में प्रस्तुत नहीं है, अपितु यह पवित्रता, आध्यात्मिक चेतना, ज्ञान एवं दिव्य सौन्दर्य का प्रतीकात्मक रूप भी है।

(क) दीवारों में पद्म अंकन

अजन्ता की गुफाओं की दीवारों में अनेक चित्र फ्रोस्को तकनीक से निर्मित किए गए हैं। इन भित्ति चित्रों के प्रमुख विषयों में भगवान बुद्ध एवं जातक कथाओं का विशेष स्थान है। इन चित्रों में भगवान बुद्ध के साथ पद्म के अंकन के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं। विशेष रूप से गुफा संख्या 1 में अंकित पद्मपाणी बोधिसत्व का चित्र उल्लेखनीय है। इस चित्र में पद्मपाणी बोधिसत्व को अपने दाहिने हाथ में नीले रंग का पद्म धारण किए हुए करूणामय भाव में चित्रित किया गया है।

बौद्ध दर्शन में पद्म का विशेष आध्यात्मिक महत्व प्रदान किया गया है। यह पुष्प विषम एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्पन्न होने के बावजूद अपनी निर्मलता, पवित्रता एवं सौन्दर्य को बनाए रखता है। इसी कारण पद्म को सांसारिक बन्धनों से मुक्त आत्मा एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक माना जाता है। अजन्ता की कला में बुद्ध एवं बोधिसत्व के साथ पद्म का अंकन इसी आध्यात्मिक विचारधारा को अभिव्यक्त करता है।

'विशेषतः पद्मपाणि बोधिसत्व के प्रसिद्ध चित्र में भगवान बुद्ध के हाथ में धारण किया गया पद्म करूणा, शान्ति दया एवं पवित्रता जैसे चारित्रिक गुणों का सन्देश देते हुए बोधिसत्व का यह चित्र अनुपम एवं अद्वितीय है।'[8] चित्र सं० 4 में बोधिसत्व के दाहिने हाथ में सनाल नीलोत्पल है जिसके फलस्वरूप उन्हें पद्मपाणि नाम से सम्बोधित किया गया है।

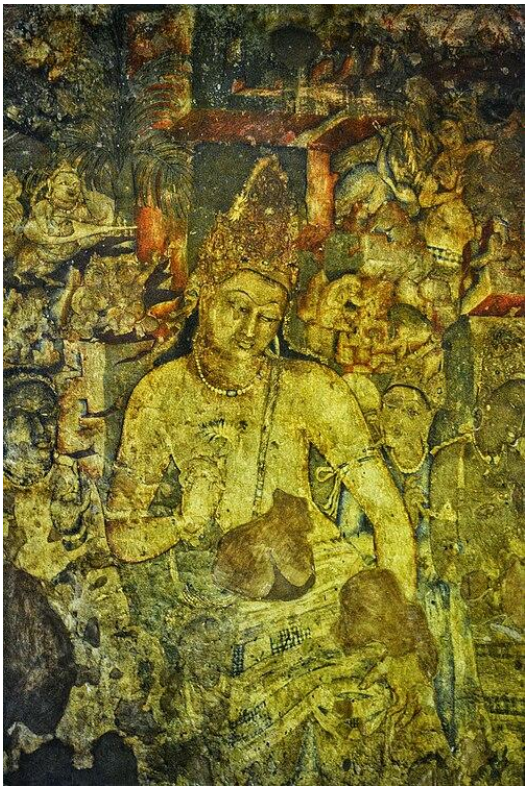

चित्र सं० 5– पद्मपाणि बोधिसत्व
चित्रस्त्रोत–https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/3/38/Padmapani_Bodhisattva-Ajanta_Caves-Aurangabad-Maharashtra.jpg

अजंता की गुफाओं में पद्म के विविध अलंकरण दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रकार अजंता की चित्रकला में पद्म का प्रयोग केवल सौन्दर्यात्मक अलंकरण तक सीमित न होकर बौद्ध दर्शन की गहन आध्यात्मिक अवधारणाओं को दृश्य रूप प्रदान करता है।

(ख) गुफा की छतों (Ceiling) पर पद्म अंकन

पद्म के विविध रूपों का कलात्मक अंकन करके शिल्पकारों ने उच्च कोटि की कलात्मक दक्षता एवं शिल्पकौशल का सुन्दर परिचय दिया है। विकसित पद्म को मन्दिरों एवं गुफाओं की छतों पर विभिन्न प्रकार के अलंकरणात्मक आलेखनों के माध्यम से अंकित किया जाने लगा, जिससे मन्दिर स्थापत्य की सौन्दर्यपरक अभिव्यक्ति

अत्यधिक प्रभावशाली हो गई। अजन्ता की गुफाओं की छतों पर अंकित वृत्ताकार ज्यामितीय आलेखनों के मध्य श्वेत पद्म का अंकन किया गया है जो छत की सज्जा को विशिष्ट सौन्दर्य प्रदान करता है।

चित्र सं० 6– गुफा की छत पर पद्म अंकन
चित्र स्त्रोत– छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

3– मूर्तिकला में पद्म अंकन

जिस प्रकार हिन्दू कला परम्परा में अधिकांश देवी–देवताओं को पद्म पर विराजमान अथवा पद्म से सम्बन्धित दर्शाया गया है उसी प्रकार बौद्व कला में भी भगवान बुद्ध को कमल आसन पर विराजमान दर्शाने की परम्परा रही है। 'गौतम बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् बौद्ध धर्म में बोधिसत्व की संकल्पना का विशेष महत्व स्थापित हुआ। बोधिसत्व वह व्यक्ति है जो केवल अपने लिये निर्वाण या मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा न रखते हुए समस्त प्राणिमात्र को कल्याण एवं मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर करने का संकल्प करता है।'[9]

प्राचीन काल से ही पद्म आसन के रूप में प्रयुक्त किया जाता रहा है जिस पर अनेक देवी–देवताओं को खड़े या बैठे हुए अलंकृत रूप में प्रदर्शित किया गया है। अधिकांश बौद्ध प्रतिमाओं को पद्मासन पर सुसज्जित दर्शाया गया है। अजन्ता की कला में भगवान बुद्ध को पद्म आसन पर अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण ढ़ग से सुसज्जित दर्शाया गया है। चित्र सं० 7 में भगवान बुद्ध एवं बोधिसत्व को पद्मासन पर खड़े प्रदर्शित किया गया है।

चित्र सं० 7– आसन रूप में पद्म अंकन
चित्र स्त्रोत– छाया चित्र (शोधार्थी द्वारा)

भारतीय कला एवं संस्कृति के अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में पद्म की सर्वमान्यता सम्पूर्ण विश्व में व्यापत है। पद्म को अपने हर स्वरूप में अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है चाहे वह प्रभामण्डल के रूप में हो, या आसन के रूप में। पद्म की आकर्षक संरचना ने प्राचीन काल से वर्तमान तक अपने सौन्दर्यमयी स्वरूप में लावण्य का समायोजन निरन्तर जागृत रखने में सक्षम हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष स्थापित होता है कि अजन्ता की कला में पद्म का अंकन मात्र पुष्पीय अलंकरण अथवा दृश्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, अपितु यह तत्कालीन धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यबोधात्मक चेतना का प्रतीकात्मक रूपान्तरण है। अजन्ता की गुफाओं में पद्म की उपस्थिति उसके विविध रूपों के माध्यम से एक ऐसे प्रतीक का निर्माण करती है, जिसमें प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक अर्थ एक दूसरे के पूरक के रूप में दृष्टिगत होते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य अजन्ता की कला में पद्म के प्रतीकात्मक अंकन के अर्थ, कलात्मक स्वरूप तथा प्रतीकात्मक का विश्लेषण करना था। उपलब्ध सामग्री से यह स्पष्ट होता है कि यह प्रतीक अजन्ता की समग्र कलात्मक संरचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय कला परम्परा में पद्म का महत्व उसकी प्राकृतिक संरचना से कहीं अधिक व्यापक है। अजन्ता के कलाकारो ने पद्म को विविध अर्थ–सन्दर्भों को वास्तु अलंकरण, भित्ति चित्र एवं मूर्तिकला में भिन्न–भिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया। इस प्रकार अजन्ता की कला में पद्म का प्रतीकात्मक अंकन भारतीय कला की उस विकसित परम्परा का साक्ष्य है जिसमें प्रकृति, धर्म, दर्शन एवं कला का समग्र अभिव्यक्ति होती है। पद्म का बहुआयामी प्रयोग अजन्ता की कलात्मक विशिष्टता को रेखांकित करने के साथ–साथ भारतीय प्रतीक परम्परा की गहनता और निरन्तरतर को भी प्रदर्शित करता है।

अन्ततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अजन्ता की कला में पद्म का अंकन तत्कालीन कलाकारों की उच्चकोटि की शिल्प दक्षता के साथ–साथ उनकी गहन प्रतीकात्मक एवं दार्शनिक दृष्टि का परिचायक है। इसलिए अजन्ता में पद्म केवल चित्रित, उत्कीर्ण या निर्मित नहीं हुआ है, बल्कि वह सम्पूर्ण कला में अर्थ, अनुभूति एवं आध्यात्मिक संवेदना के रूप में व्यापत है। यही विशेषता पद्म को अजन्ता की कला में एक महत्वपूर्ण प्रतीक बनाती है एवं भारतीय कला इतिहास में इसके अध्ययन की प्रासंगिकता को स्थापित करती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

1– वर्मा, अविनाश बहादुर(1968) भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली, प्रकाश बुक डिपो, पृ० 60

2– श्रीवास्तव, ए० एल०(1999) भारतीय कला प्रतीक, इलाहाबाद, उमेश प्रकाशन, पृ० 14

3– शुक्ल, शत्रुघ्नलाल(2002) भारतीय तन्त्र विद्या, मथुरा, हिन्दी सेवा सदन, पृ० 21

4– शुक्ल, शत्रुघ्नलाल(2002)भारतीय तन्त्र विद्या, मथुरा, हिन्दी सेवा सदन, पृ० 216

5– पाण्डेय,प्रभाशंकर(2001)सुप्रतिकाः प्राचीन भारतीय कला में प्रतीक, दिल्ली, शारदा पब्लिशिंग हाउस , पृ० 117

6– वर्मा, परिपूर्णानन्द(1964) प्रतीकशास्त्र, लखनऊ, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, पृ०230

7– वर्मा, अविनाश बहादुर(1968) भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली, प्रकाश बुक डिपो, पृ० 60

8– श्रीवास्तव, विमल मोहिनी(2002),प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ० 80

9–श्रीवास्तव, विमल मोहिनी(2002),प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, पृ० 80

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.